हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G. Sem II

<u>विषय</u> — भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य का विकास का शेष भाग :—

प्रेस के स्थापित होने से गद्य के प्रचार प्रसार में बहुत सहायता मिली। आधुनिक युग का सूत्रपात हो रहा था। साहित्य में रीतियुगीन शैलियाँ त्यागी जाने लगी थी। इस काल में ~~ब्रजभाषा~~ ब्रजभाषा के ग्रन्थों के आधार पर पद्य ग्रन्थ विशेषतः लिखे गये। और संस्कृत फारसी अरबी के आधार पर भी जब-तब हिन्दी में ग्रन्थ अनूदित किये गये, इन्हें अनुवाद संभवतः नहीं कहा जा सकता।

इस काल के आरम्भ में ब्रजभाषा के ग्रन्थों के आधार पर गद्य-ग्रन्थ लिखे गये। इस काल में हमें जिन संस्थाओं और व्यक्तियों से गद्य-रचना में योगदान मिला, जो निम्नलिखित है :—

(1) मुक्त रचनाएं : व्यक्तिगत विनोद में जैसे ईंशाअल्ला खाँ की रानी केतकी की कहानी।

(2) फोर्ट विलियम कॉलेज के लल्लू लाल जी आदि द्वारा विदेशियों के लिए। किन्तु यहाँ के 'प्रेमसागर' भारत में भी लोकप्रिय हुआ।

(3) कुछ सोसाइटियों द्वारा स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें।

(4) ईसाई मिशनरियों द्वारा बाइबिल आदि का अनुवाद।

(5) समाचार पत्रों द्वारा हिन्दी का प्रथम पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' था।

(6) राजनीतिक और निजी पत्रों द्वारा गद्य रचना।

इन माध्यमों से गद्य में आवश्यकतानुसार ही साहित्य रचा गया पर खड़ी बोली और उसका गद्य रूप प्रतिष्ठित अवश्य हो गया। इनमें ज्ञान-विज्ञान की पुस्तकें लिखी जाने लगीं तथा शिक्षा के प्रसार का भी

कार्य हुआ। जनता को शिक्षित करने की ओर ध्यान दिया गया। यह अनिवार्य भी था। यह नवजागरण अब जनता के द्वार तक पहुँच रहा था। अंग्रेजी साम्राज्य के पैर जम चुके थे। इस काल में ब्रह्म समाज तथा आर्य-समाज आदि का प्रादुर्भाव हो रहा था, इससे अतीत की शान-गरिमा का नया संस्करण और नई अवस्थाएँ उभर रही थी। आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी 'दयानन्द सरस्वती' इस नवजागरण में हिन्दी की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण थे। 'राजा शिवप्रसाद सितारे' 'हिन्द' ने शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कार्य किया। उन्होंने हिन्दी गद्य के विकास में भी पूरा-पूरा योगदान दिया। पाठ्यपुस्तक के रूप में 'सितारे हिन्द' ने जो गुटका तैयार किया था भारतेन्दु ने उसी से हिन्दी सीखी थी। इसी कारण वे राजा शिवप्रसाद को अपना गुरु मानते थे। इस प्रकार राजा शिवप्रसाद एक कड़ी थे जो फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दी गद्य

काल को भारतेन्दु से जोड़ते थे। वे पहले उस भाषा के पक्षधर थे जो जनता की भाषा थी। वे मानते थे कि हिन्दी अपने निजी रूप में ही बिना अन्य भाषाओं की सहायता लिए लिखी जानी चाहिए और उसी रूप का महत्व मिलना चाहिए। 'शकुन्तला' नाटक के अनुवाद से उन्होंने हिन्दी का अपना रूप दिखा सिद्ध किया। इस प्रकार गद्य-विधा के कई रूप पनपे। तभी भारतेन्दु जी का पदार्पण हुआ और भारतेन्दु-युग का प्रवर्तन हुआ। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सर्वतोभा हिन्दी के युग पुरुष थे।